ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे　　　निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 83 बुलेटिन अवधिः 1 नवम्बर–5 नवम्बर, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 31 अक्टूबर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	01–11–2017	02–11–2017	03–11–2017	04–11–2017	05–11–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	20	20	20	19	19
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	10	10	10	10
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	006	004	008	004
वायु की दिशा	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**24** से 30 **अक्टूबर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में हल्के और मध्यम बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 18.7 से 21.4 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 7.5 से 8.8 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- रबी फसलों की बुवाई हेतु खेत तैयार करें।
- फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बेन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।

- जिन किसान भाईयों कि धान की फसल कट गई है उसकी मड़ाई करें।
- भण्डारण के लिए धान को काटकर अच्छी प्रकार सुखा लें ताकि उसमें नमी की मात्रा 12–14 प्रतिशत तक आ जाएं।

उद्यान प्रबन्धः

- टमाटर के मुर्झाने की अवस्था में ट्राइकोडर्मा हरजियानम या सूडोमोनास फ्लोरीसंस का 8–10ग्राम/ली0 पानी की दर से घोल बनाकर संक्रमित पौधों व उसके आस–पास के पौधों में छिड़काव करें।
- मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरॉन 3 सी0जी0, 25 कि0ग्रा0 /है0 की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।
- टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एच0सी0, 150मि0ली0/है0 या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एच0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से प्रयोग करें।
- टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0 /है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम /है0 की दर से प्रयोग करें।
- यदि पूर्व में राई पौध का प्रतिरोपण किया गया है तो 15 से 20 दिन पश्चात्, एक दिन हल्की सिंचाई कर अगले दिन यूरिया की टाप ड्रेसिंग अपराहन में करें।
- तैयार खेतों में तथा पॉलीहाउस के भीतर लगी सब्जी राई की पौंध प्रतिरोपण हेतु तैयार है तो अपराहन के समय 50 ग 40 से0मी0 की दूरी पर प्रतिरोपण करें।
- टमाटर की फसल में पत्तियां सिकुड़ने की अवस्था में प्रभावित पौधों को निकालकर नष्ट कर दें एवं किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में बैंगन एवं शिमलामिर्च के फलों की तुड़ाई करें तथा रोग युक्त फलो/पत्तियों या पौंध अवशेषों को खेत से बाहर करें।
- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में सेब की तुड़ाई कर उसकी पैकिंग करें।
- सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम इत्यादि फल वृक्षों की गिरी पत्तियों को इकट्ठा करके गड्ढे में डाले तथा बीमार एवं रोगग्रसित पत्तियों को जलाकर नष्ट कर दें।
- शीतोष्ण फल वृक्षों के थालों की सफाई करना प्रारम्भ करें। तथा नये बगीचे लगाने के लिए लेआउट का कार्य प्रारम्भ करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- खुरपका मुखपका के लक्षण–आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दशा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।
- इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।

- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- नवजात पशु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

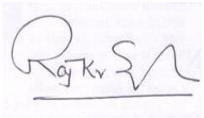

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर